ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन की सम्भावनाएँ

प्राप्तिः 22.05.2021
स्वीकृतः 15.06.2021

डा0 सीमा रानी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, जहाँगीराबाद, बुलन्दशहर।
ईमेलः seemakota1977@gmail.com

सारांश

ग्रामीण पर्यटन एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ ग्रामीण जीवन से सम्बन्धित सभी क्षेत्र परिलक्षित होते है। गॉवों में प्रकृति का सौंदर्य बिखरा पडा है। यहाँ की लोक कलाएँ हस्ताशिल्प व संस्कृति पर्यटकों को आकर्षित करने के लिये पर्याप्त है।

लेकिन ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने उसका विकास करने के लिए एक रूपरेखा बनानी होगी जिससे गावों में उपलब्ध पर्यटन सम्बन्धी संसाधनों का उचित उपयोग हो सकें। इसके लिये ग्रामीण पर्यटन को विभिन्न वर्गो में वर्गीकृत करना होगा। जैसे किसी क्षेत्र विशेष की कृषि व परम्पराओं को अलग करना होगा। धार्मिक परम्पराओं, धार्मिक से जुडे स्थलों को अलग–अलग करना होगा। जिससे पर्यटकों को अपनी रूचि के अनुरूप पर्यटन स्थलों का चुनाव करने में सरलता लगे।

भारत में पर्यटन जो कि पूर्व में केवल बडे शहरों और ऐतहासिक धार्मिक प्राकृतिक महत्व के स्थलों से जुडा उद्यम था लेकिन अब यह ग्रामीण क्षेत्रों की ओर अग्रसर है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों की आय भी बढेगी और ग्रार्मीण क्षेत्रों के विकास के साथ–साथ महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि ग्रामीण युवाओं के ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर पलायन में भी कमी आयेगी।

मुख्य शब्दः *ग्रामीण पर्यटन, संसाधन, प्राकृतिक स्थल, कला, संस्कृति, आय, पलायन।*

प्रस्तावना

प्रति दिन की भागदौड़ के बाद फुर्सत के कुछ पल बिताने के लिए प्रत्येक व्यक्ति का मन ऐसी जगह जाने का होता है जहाँ वह सूकून के कुछ पल गुजारे। इसके लिये वह ऐसी जगह का चयन करता है जहाँ शांति हो। जैसे पहाडी क्षेत्र, ऐतहासिक स्थल या वह ऐसे नये स्थानों को खोजता है जहाँ वह नही गया हो। लेकिन व्यस्त पर्यटन के मौसम में परम्परागत पर्यटन स्थानों पर भारी भीड़ होती है। ऐसे में ग्रामीण पर्यटन को उत्साहवर्द्धक परिणाम मिल रहे हैं।

वास्तव में ग्रामीण पर्यटन एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ ग्रामीण जीवन से सम्बन्धित सभी क्षेत्र परिलक्षित होते हैं, जैसे ग्रामीण जीवन शैली, कला और ग्रामीण संस्कृति। वास्तव में ग्रामीण पर्यटन ग्रामीण क्षेत्रों की धरोहरों को भी दर्शाता है। भारत की 2011 की जनगणना के अनुसार लगभग 6,40,867 गावों में लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। प्रत्येक गाँव की अपनी एक अलग संस्कृति, भाषा, खान–पान व पहनावा होता है। चूँकि भारत जैसा देश जिसमें विविधता और

अनेकता का समायोजन दिखाई देता है वहाँ गावों में भी भौगोलिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता देखने को मिलती है। गाँवो में प्रकृति का सौंदर्य बिखरा पडा है। यहाँ की लोक कलाएँ, हस्तशिल्प व संस्कृति पर्यटको को आकर्षित करने के लिये पर्याप्त है। भारत में ग्रामीण पर्यटन की अवधारणा सर्वप्रथम राष्ट्रीय पर्यटन नीति 2002 में पेश की गई थी। इसमें ''एग्रोरूरल टूरिज्म'' को प्रोत्साहित करने का विचार किया गया। इसमें ग्रामीण पर्यटन को परिभाषित करते हुए कहा गया कि जो ग्रामीण जीवन, कला संस्कृति और ग्रामीण स्थलों पर धरोहर को प्रदर्शित करता है व जिससे स्थानीय समुदाय को आर्थिक व सामाजिक लाभ होता है और जो सुखद पर्यटन अनुभव के लिए पर्यटकों और स्थानीय लोगों के बीच विचार विनिमय में मदद करता है ''ग्रामीण पर्यटन'' कहलाता है। नौवी पंचवर्षीय योजना में इसे मुख्य स्थान दिया गया है। 2002 में ग्रामीण पर्यटन योजना बनाई व इसके बाद ''एंडोजीनियस टूरिज्म प्रोजेक्ट'' के तौर पर संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) के सहयोग से इसे लागू किया गया। इस सब के साथ–साथ ग्रामीण पर्यटन को विकसित करने के लिए सबसे आवश्यक है ग्रामीणों में जागरूकता बढाना और ग्रामीण स्थानीय समुदायों की पर्याप्त भागीदारी। ग्रामीण पर्यटन के विकास में ये मुख्य कारक है जो इसे विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। ग्रामीण पर्यटन के विकास के सम्बन्ध में विभिन्न शोधकर्ताओ ने अपने अध्ययन किये हैं।

भारत में ग्रामीण पर्यटन की संभावनाओ और प्रभाव विषय पर सन् 2011 में उमाकांत इदौलिया द्वारा एक अध्ययन किया गया। जिसमें उन्होने सामोद (जयपुर) के विशेष सन्दर्भ में ग्रामीण पर्यटन का उल्लेख किया। इस अध्ययन के लिए शोधकर्ता ने सांस्कृतिक और ऐतहासिक धरोहर से समृद्ध राजस्थान के सामोद (जयपुर) गांव का चयन किया। जिसमें उन्होनें स्थानीय निवासियों व पर्यटकों से प्रश्नावलियों के आधार पर सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व पर्यावरणीय प्रभाव से सम्बन्धित प्रश्नों के आधार पर तथ्य एकत्र करते हुए ग्रामीण पर्यटन के सस्कृतिक, समाज अर्थव्यवस्था व पर्यावरण पर पडनें वाले प्रभावों का समीक्षात्मक विवरण प्रस्तुत करते हुए सकारात्मक व नकारात्मक प्रभावों का उल्लेख करते हुए समाधान प्रस्तुत किये। अपने अध्ययन के निष्कर्ष में उन्होनें बताया कि ग्रामीण पर्यटन ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सुधार तो लाता ही है साथ–साथ राष्ट्र की आर्थिक स्थिति जीवन शैली पर सकारात्मक प्रभाव पडता है।

अंशुमाली पाण्डे (2015) ने अपने शोध पत्र ''दादर व नगर हवेली के ग्रामीण पर्यटन का विकास'' में ग्रामीण पर्यटन का उल्लेख करते हुए बताया है कि यह क्षेत्र अब अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान प्रदर्शित कर रहा है। उन्होने प्राथमिक व द्वितीयक स्त्रोतों के आधार पर तथ्यों को एकत्र किया। अध्ययन के फलस्वरूप यह ज्ञात हुआ कि उस क्षेत्र के पर्यटन विकास ने वहाँ की आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस अध्ययन में वह ग्रामीण पर्यटन के विकास में स्थायी उपायों की कमी का भी उल्लेख करते हैं।

अजिता कुमारी (2019) ने ग्रामीण पर्यटन के सम्बन्ध में अपने शोध पत्र में भारत में ग्रामीण पर्यटन के सम्बन्ध में बताया है कि ग्रामीण पर्यटन वास्तव में ग्रामीण विकास का मुख्य स्त्रोत साबित हो रहा है। उनके अनुसार आज के सूचना क्रान्ति के युग में संचार तंत्र के बिना पर्यटन सुविधाएँ प्रभावित नही कर पाती है। मोबाइल, इन्टरनेट, टेलीविजन जैसी संचार सुविधाओं ने पर्यटकों को गॉवों की ओर आकर्षित किया है।

उपरोक्त अध्ययन इस दिशा की ओर हमारा ध्यान इंगित करते हैं कि ग्रामीण पर्यटन विकास के लिए एक नई दिशा निर्धारित करती है। अतः ग्रामीण पर्यटन वह माध्यम है जिससे हम भारत की असल तस्तीर देख सकते हैं। ग्रामीण पर्यटन के जरिये सस्कृति को करीब से देखने का अवसर प्राप्त होता है।

ग्रामीण पर्यटन वास्तव में कई अर्थों में महत्वपूर्ण हो जाता है जैसे ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढेगे। जिससे ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन कम होगा। ग्रामीण क्षेत्रों का विकास होगा और ग्रामों में निवास करने वालो का जीवन स्तर भी बढ़ेगा। उन्हे राष्ट्र की मुख्यधारा में शामिल होने के अवसर प्राप्त होगें।

ग्रामीण पर्यटन के अन्तर्गत मात्र गावों की धरोहरों का दर्शन मात्र ही नही है बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में हस्त शिल्प, दस्तकारी की वस्तुओं के अलावा अनेक स्थानीय उत्पाद भी होते है। ग्रामीण पर्यटन से बुनकरों व कारीगरों की यह कला राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचेगी। लोगों को इनमें रूचि बढ़ेगी तो उत्पादन बढ़ेगा अन्यथा ये ग्रामीण हस्तशिल्प समयान्तरल पर विलुप्त हो जायेगे।

भारत में ग्रामीण पर्यटन के अर्न्तगत ग्रामीण क्षेत्रों की विरासत, उनकी कला और संस्कृति, धार्मिक परम्पराएं, प्राकृतिक पर्यटन आदि के अनेक अवसर उपलब्ध है। वास्तव में ग्रामीण विकास के सन्दर्भ में यदि ग्रामीण पर्यटन को बढावा दिया जाये तो इसके परिणाम लाभकारी होगें। जिस रोजगार की तलाश में ग्रामीण युवा गांवों से पलायन करते हैं। अगर वही रोजगार ग्रामीण पर्यटन के रूप में ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध होगे तो उनका पलायन रोका जा सकता है और गांवों का विकास किया जा सकता है।

लेकिन ग्रामीण पर्यटन को बढावा देने उसका विकास करने के लिए एक रूपरेखा बनानी होगी जिससे गांवों में उपलब्ध पर्यटन सम्बन्धी, संसाधनो का उचित उपयोग हो सके। इसके लिए ग्रामीण पर्यटन का विभिन्न वर्गों में वर्गीकृत करना होगा। जैसे किसी क्षेत्र विशेष की कृषि व परम्पराओं, धार्मिक स्थलों, प्राकृतिक–स्थलों और कला व संस्कृति से जुड़े स्थलों को अलग–अलग वर्गीकृत करना होगा। जिससे पर्यटन स्थलों का चुनाव करने में सरलता लगे। इसके लिए ग्रामीण युवा अपनी सुविधानुसार पर्यटकों के लिए विभिन्न पैकेजों का निर्माण, पर्यटको की रूचि के अनुसार करके उनका ध्यान आकर्षित कर सकते हैं।

इसके अन्तर्गत ग्रामीण पर्यटन को निम्न रूप में वर्गीकृत कर पर्यटकों के लिए सुविधजनक बनाकर उपलब्ध कराया जा सकता है जिससे उन्हें चयन में सुलभता हो।

जैसे संस्कृति पर्यटन के अन्तर्गत विशेष क्षेत्र की स्थानीय संस्कृति सम्बन्धी गतिविधियों अनुष्ठानों की जानकारी व विभिन्न सांस्कृतिक उत्सवों में प्रतिभाग करने के अवसर प्रदान किये जा सकते हैं। भोजन पर्यटन के अन्तर्गत पर्यटकों विशेष क्षेत्र के व्यंजनो की विविधताओं को जानने व उनका आनन्द लेने का अवसर प्राप्त होता है। दूर दराज ग्रामीण इलाकों में बने किले व हवेलियाँ जो देखरेख के अभाव में खंडहर हो रहे थे वे हेरिटेज होटलो में परिवर्तित कर दिये गये हैं।

भारत के प्रसिद्ध ग्रामीण पर्यटक स्थलों में बेहद विविधता है जैसे पंजाब के किला रायपुर में ग्रामीण, ओलम्पिक होता है जिसमें बैलगाड़ी की दौड़, अन्य प्रकार के खेल व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है। हिमाचल प्रदेश के कांगडा जिले का गुलेहर गांव कलाप्रेमियों के लिये ''कला ग्राम'' के रूप में विकसित किया गया है। राज स्थान के जोधपुर में विश्नोई गांव प्रकृति से प्रेम व परम्परागत भव्य राजस्थानी अतिथ्य के लिये प्रसिद्ध है। यहाँ राजस्थानी लोकनृत्य,

ऊँट की सवारी व अन्य सास्कृति कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता है। इस तरह के अनेक उदाहरण भारत में विभिन्न राज्यों में उपस्थित हैं।

ग्रामीण पर्यटन से ग्रामीण क्षेत्रों की कलाओं को महत्व प्राप्त हो रहा है। इस तरह सस्कृति पर्यटन के रूप में इसका एक महत्वपूर्ण रूप विकसित हो रहा है।

कृषि पर्यटन भी ग्रामीण पर्यटन का ही एक अन्य रूप है।

कृषि पर्यटन के अन्तर्गत विशेष क्षेत्र की फसलो, उनके उगाने के लिए किसानों द्वारा किये जाने वाले कार्य व कृषि यंत्रो की जानकारियाँ प्राप्त होती है।

इसी तरह नृजातीय पर्यटन के अन्तर्गत ग्रामीण समुदायों में पायी जाने वाली विभिन्न जातियों की संस्कृति उनकी जीवन शैली, धार्मिक विश्वासो की जानकारी प्राप्त होती है।

इस तरह देखा जाए तो ग्रामीण पर्यटन लोगों को ग्रामीण क्षेत्रों की जानकारी के साथ–साथ देश के सूदूर भागों में व्याप्त विविधता की खोज करने में सहायक होता है।

ग्रामीण पर्यटन की सम्भावनाओं को देखते हुए भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय भी इस दिशा में प्रयासरत है और विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं जिससे कि देश में ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा मिल सके।

पर्यटन मंत्रायल द्वारा ''हुनर से रोजगार'' प्रोत्साहन योजना का संचालन किया जाता है। जिसके अंतर्गत युवाओं को प्रशिक्षण दिया जाता है। भारत में पहले चरण में 35 पर्यटन सर्किट स्थल शामिल करने की योजना बनायी गयी। इन स्थलों की पहचान कर इन्हें सरकारी–निजी भागीदारी के आधार पर विकसित किया जा रहा है। इसके अलावा भारत सरकार द्वारा ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देन के लिए विशेष पर्यटन अंचल, ई पर्यटन वीजा सुविधा, PRSAD (पिल्ग्रिमेज रिज्यूबनेशन फॉर स्प्रिन्चुअल ओगमेंटेशन ड्राइव) आदि अनेक कार्यक्रमों पर पर्यटन मंत्रालय काम कर रहा है।

इसके अतिरिक्त ग्रामीण पर्यटन का विकास होने से अधिकाधिक पर्यटकों द्वारा गाँवो की यात्रा करने से गांवो की शहरो के सम्पर्क माध्यम सड़कों में भी सुधार आयेगा। परिवहन सेवाओं में बढ़ोतरी होगी। ग्रामीण समुदाय के व्यक्ति पर्यटकों को प्रकृति के संरक्षण की शिक्षा दे सकते हैं। पर्यटको में गाँवो के स्थानीाय धार्मिक और परम्परागत अनुष्ठानों में रूचि विकसित की जा सकती है।

लेकिन इस सबके साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्रों पर कुछ नकारात्मक प्रभाव भी दृष्टिगत हो सकते हैं। सबसे मुख्य बात तो यह है कि ग्रामीण लोगों की परम्परागत जीविका अर्थात कृषि पर प्रभाव पड़ेगा और वे पर्यटन से सम्बन्धित आकर्षक जीविका के माध्यम की ओर आकर्षित हो सकते हैं। जिससे कृषि के उत्पादन पर प्रभाव पड़ेगा और उसमें कमी आयेगी।

भारत में ग्रामीण पर्यटन के विकास में इन समस्याओं के साथ–साथ यहाँ एक बड़ी समस्या ग्रामीण क्षेत्रों में सुविधाओं की कमी है। गॉव में पर्यटन के लिए पहुँचना आसान है पर वहाँ पर रहना उतना आसान, सरल व सुविधजनक नही है। पर्यटकों को उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप सुविधाओं की कमी अवश्य अखरेगी। लेकिन ऐसा नही है भारत में कुछ राज्यों में ग्रामीण पर्यटन से इन समस्याओं से निपटने के सफल प्रयास भी किये गये है। सन् 1991 में ''हेल्प टूरिज्म'' नामक संस्था ने सिक्किम के एक गॉव में बुनियादी आवश्यकताओं व स्वच्छता की सुविधा उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया। जिसमें गॉव के कुछ परिवारों को शामिल किया गया गया जो रहने व

भोजन की सुविधा पर्यटको को उपलब्ध कराते थे ये सुविधाऐ स्वच्छ और आरामदायक है जिनको ग्रामीण परिवेश के अनुरूप रखा गया।

भारत में पर्यटन जो कि पूर्व में केवल बड़े शहरों और ऐतहासिक धार्मिक प्राकृतिक महत्व के स्थलों से जुडा उद्यम था लेकिन अब यह ग्रामीण क्षेत्रों की ओर भी अग्रसर हो गया है। वास्तव में अगर ग्रामीण परियोजनाओ को सुनियोजित ढंग से विकसित कर प्रभावी तरीके अपनाये जाये और ग्रामीण युवाओं को प्रशिक्षित किया जाये तो उन्हे गॉवों में ही रोजगार के अवसर प्राप्त हो जायेंगे। इससे ग्रामीण क्षेत्रों की आय भी बढ़ेगी और ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के साथ–साथ महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि ग्रामीण युवाओं के ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर पलायन में भी कमी आयेगी। जिससे शहरो पर बोझ कम पड़ेगा और इसका लाभ सम्पूर्ण राष्ट्र को मिलेगा।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. कुमारी अजिता, पर्यटन का नया आयाम, *Indian Journal of Research*, Vol-8, Issue-9 September 2019
2. राय, मधुरा, ग्रामीण पर्यटन विकास और विस्तार की ओर, *कुरूक्षेत्र* दिसम्बर 2019 पेज नं0 8–11
3. इंदौलिया, उमाकांत, *''ग्रामीण पर्यटन की संभावनाए एवं प्रभाव, ''अखण्ड ज्योति'',* सितम्बर 2015, पेज नं0 43–44
4. सिन्हा शिशिर, *''भारत में ग्रामीण पर्यटन संसाधनों का विकास जरूरी' कुरूक्षेत्र* दिसम्बर 2017 पेज नं0 32–35
5. शर्मा, हरिकिशन, *ग्रामीण पर्यटन में रोजगार के अवसर' कुरूक्षेत्र,* दिसम्बर 2017 पेज नं0 29–31
6. मोहन : अजय, *भारत में ग्रामीण पर्यटन से रूक सकता है गांवों से पलायन,* hindi.oneindia.com
7. www.google.com